



भाकृअनुप - डीपीआर समाचार पत्र

सरदार पटेल पुरस्कार - 2013 से पुरस्कृत उत्कृष्ट भाकृअनुप संस्थान



निदेशक स्तंभ



भाकृअनुप - डीपीआर समाचार पत्र के जुलाई-दिसंबर, 2021 के इस अंक को प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस अवधि के दौरान संस्थान के अनुसंधान कार्यों की प्रगति के साथ-साथ प्रौद्योगिकियों का स्थानांतरण, विस्तार और कौशल विकास के क्षेत्रों में भी कार्य हुआ है। इस अवधि के दौरान संस्थान में देशी कुकुट पालन के विकल्प के रूप में मांस उद्देश्य हेतु एक नई संकर नस्ल का विकास किया गया। इस संकर नस्ल से किसानों की सकल आय में आशाजनक वृद्धि दर्ज की। विभिन्न अनुपात में कुकुट अपशिष्ट को चावल के भूसे के साथ पूरक के रूप में मिलाकर वर्मीकम्पोस्ट में परिवर्तित करके कुकुट अपशिष्ट का उचित पद्धति से निस्तारण किया गया। इस अवधि के दौरान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र पर श्वेत पेकिन बत्तख को मांस और अंडों के उत्पादन प्रदर्शन के लिए गहन पालन प्रणाली अध्ययन किया गया। संस्थान ने हितधारकों के लिए विभिन्न प्रशिक्षण एवं विस्तार

कार्यक्रम आयोजित किए, इसी के तहत अदिलाबाद जिला (तेलंगाना) के गोंड जनजातियों में घर आँगन कुकुट पालन के उन्नत किस्मों (वनराजा और ग्रामप्रिया) के वयस्क कुकुट रैन बसरे, दाना पात्र, जल पात्र एवं दाना वितरित किए गए। निदेशालय के वैज्ञानिकों ने इस अवधि के दौरान विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों एवं संगोष्ठियों में भाग लिया एवं प्रपत्र प्रस्तुतीकरण में पुरस्कार भी प्राप्त किए। संस्थान के कर्मचारियों ने स्वच्छ भारत अभियान की गतिविधियों में सक्रिय और नियमित रूप से भाग लिया।

आर.एन.चटर्जी
(आर.एन.चटर्जी)
निदेशक

विषय वस्तु
अनुसंधान की मुख्य विशेषताएं
प्रौद्योगिकी हस्तांतरण
अन्य गतिविधियां
मानव संसाधन विकास
पुरस्कार/मान्यताएं
आयोजित बैठकें
व्यक्तिगत

अनुसंधान की मुख्य विशेषताएं

देशी कुकुट पालन के विकल्प के रूप में मांस उद्देश्य हेतु एक नई संकर नस्ल का विकास

देशी कुकुट पालन के विकल्प के रूप में मांस के उद्देश्य से एक आशाजनक संकर कुकुट विकसित की गयी। इन कुकुटों का खेतों और खुले क्षेत्रों दोनों स्थितियों में मूल्यांकन किया गया। कुल 438 कुकुटों को फार्मों एवं 1000 कुकुटों को क्षेत्रों में ब्रॉयलर के पूर्ण आहार दाना के साथ गहन प्रणाली के तहत मूल्यांकन किया गया। प्रबंधन की गहन प्रणाली के तहत 12 सप्ताह की आयु में शरीर का वजन फार्म में 1716 ± 64.10 ग्राम और किसान के फार्म में 1661 ± 18.58 ग्राम रहा।

किसानों को प्रति 100 कुकुटों पर औसत ₹.17,200 के साथ खर्च ₹.15,000-19,500 रहा। प्रति किसान की औसत सकल आय ₹.32,023 रही। तीन से चार महीने की आयु के 100 असील संकर कुकुटों का पालन कर कुकुटों की थोक बिक्री सहित प्रत्येक किसान द्वारा कुल औसत आय ₹.32,023 अर्जित की गयी। प्रति किसान शुद्ध लाभ ₹.14,823 रहा। संकर किस्म का लागत लाभ अनुपात (सीबीआर) 1.86 रहा, जो निवेश की लागत से लगभग दुगना था, जो इस गतिविधि को आरंभ करने की उज्ज्वल व्यापकता को दर्शाता है। निवेश पर की गयी प्रतिफल (आरओआई) की गणना 86.2% रही। उत्पादन की लागत एवं प्रति कुकुट सकल आय क्रमशः ₹.172 और ₹.320 रही। प्रति कुकुट शुद्ध आय ₹.148 रही। परिवर्तनीय लागत पर प्रतिफल (आरओबीसी) प्रति 100 कुकुटों की इकाई के लिए ₹.14,823 रहा जो प्रति

कुकुट पर ₹.148 होता है। एक सौ कुकुटों को पालने से प्रति किसान की मासिक आय ₹.3,708 रही।

दो सौ कुकुटों की एक छोटी इकाई पर ₹.64,000 अतिरिक्त आय के साथ प्रति कालचक्र में रसद लाभ ₹.30,000 रहा। प्रति वर्ष एक किसान कम से कम 3 से 4 कालचक्र पाल कर ₹.90,000 से 1,20,000 शुद्ध लाभ पा सकता है। यह आय उसके अन्य कृषि और पशुधन स्रोतों से होने वाली नियमित आय के अतिरिक्त होती है। हालांकि, बाजार की मांग एवं कीमतों में उत्तर-चढ़ाव के आधार पर दरें भिन्न हो सकती हैं।

यु. राजकुमार एवं अन्य..

वनराजा चूजों के आहार में बीएसएफ लार्वा भोजन एक नया प्रोटीन का स्रोत

वनराजा चूजों के आहार में कर्नटिक से प्राप्त बीएसएफ लार्वा मील (बीएसएफएलएम) के नमूने का मूल्यांकन करने के लिए एक प्रयोग किया गया। एक दिन की आयु वाले कुल 420 वनराजा चूजों को यादृच्छिक रूप से 5 उपचार समूहों में विभाजित किया गया, जिनमें से प्रत्येक में 6 चूजों की 14 प्रतिकृतियां रही। बीएसएफएलएम युक्त प्रायोगिक आहार को 0, 3, 6, 9 और 12% पर आइसो-कैलोरिक एवं आइसो-नाइट्रोजेनस आधार पर मिश्रित किया गया और इसे 0 से 6 सप्ताह की आयु के चूजों को (एड-लिबिटम) खिलाया गया। प्रदर्शन, सीरम जैव रासायनिक प्रोफ़ाइल और प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया के संदर्भ



बीएसएफ लार्वा आहार

में चूजों की प्रतिक्रिया का मूल्यांकन किया गया। इसके अतिरिक्त भाकृअनुप- एनआरसीएम, हैदराबाद के सहयोग से कटाई उपारंत पैदावार और मांस की गुणवत्ता सहित पंजर भिन्नताओं पर भी आंकड़े एकत्र किए गए।

0-6 सप्ताह की आयु के दौरान बीएसएफएलएम को 12% तक के आहार में शामिल करने से वनराजा चूजों (शरीर का वजन बढ़ना, आहार का सेवन और एफसीआर) के प्रदर्शन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं देखा गया। इसके बजाय चूजों के आरंभिक जीवन के दो सप्ताहों के दौरान बीएसएफएलएम को ग्रेडेड स्तरों पर खिलाए गए समूहों में शरीर के वजन में बढ़ोत्तरी के लाभकारी प्रभाव दर्ज किए गए। नियंत्रण कुकुटों की तुलना में बीएसएफएलएम के निचले स्तरों पर तरल प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया (एनडी टाइट्रेस) अधिक रही, जबकि सेलुलर प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया (पीएच-पी प्रतिक्रिया) प्रभावित नहीं हुई। SGPT एवं BSFLM की सीरम सांद्रता 9 और 12% के उच्च स्तर पर बढ़ी एवं SGOT के आहार में 12% BSFLM के उच्चतम स्तर में कमी हुई। वथ के आंकड़ों ने संकेत दिया कि आहार में बीएसएफएलएम को सम्मिलित करने से ड्रेसिंग की पैदावार, शरीर का वजन, आंतों का वजन, कटे हुए पंजर के भाग, संवेदी लक्षणों सहित मांस की गुणवत्ता प्रभावित नहीं हुई। इस प्रकार समग्र परिणामों ने संकेत दिया कि बीएसएफएलएम को 0-6 सप्ताह की आयु के दौरान वनराजा चूजों के आहार में 12% तक सुरक्षित रूप से सम्मिलित किया जा सकता है, जिसका प्रारंभिक जीवन के दौरान विकास पर लाभकारी प्रभाव पड़ता है।

एम.वी.एल.एन.राजू

कंपोस्टिंग के माध्यम से सतत कुकुट अपशिष्ट प्रबंधन

कुकुट उद्योग वर्तमान में जिन प्रमुख मुद्दों का सामना कर रहा है उन में से मुख्य रूप से इनका अपशिष्ट है, विशेष रूप से खाद और अपशिष्ट का संचय है, जो गहन पालन उत्पादन से उत्पन्न होता है, जो बिना किसी उपचार के फार्म में निपटाए जाने पर बड़ी पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न कर रहा है। कुकुट अपशिष्ट (अपशिष्ट) को वर्मीकम्पोस्ट (संपत्ति) में परिवर्तित करके उत्पादक उद्देश्यों के लिए अपशिष्ट का उपयोग कर इस समस्या का हल किया जा सकता है। कुकुट पालन से उत्पन्न अपशिष्ट को चावल के छिलके के साथ इसमें मौजूद कार्बन से नाइट्रोजन (सी/एन अनुपात) के उचित अनुपात में चावल के छिलके के साथ मिलाकर खाद के रूप में सफलतापूर्वक परिवर्तित किया जा सकता है। अंत में केंचुओं को खाद के ढेर में डालकर खाद से वर्मीकम्पोस्ट तैयार किया गया।

i) 35:1 सी/एन अनुपात के साथ कम्पोस्ट तैयार करना

35:1 सी/एन अनुपात के साथ कम्पोस्ट तैयार किया गया, जिसमें कुकुट अपशिष्ट के साथ चावल के भूसे को अंतरंग तरी 45%, पीएच 5.5 और तापमान 39°C. पर 35 किलोग्राम अपशिष्ट को 84 किलोग्राम चावल के छिलके के साथ मिला कर इसे तैयार किया गया। आद्रता 45 से 50 प्रतिशत के आसपास बनी रही। चावल के छिलके को कुकुट अपशिष्ट के साथ अच्छी तरह मिलाया गया। ढेर के अंदर होने के कारण जीवाणुओं के बढ़ने से तापमान बदल रहा था। 98 वें दिन कंपोस्ट तैयार हुआ।



चावल का भूसा 35:1 सी/एन अनुपात के साथ खाद

ii) 30:1 सी/एन अनुपात के साथ खाद की तैयारी

सापेक्ष आद्रता 47%, pH 5.5 एवं तापमान 40°C. पर 51 किलोग्राम अपशिष्ट को 84.15 किलोग्राम चावल के छिलके के साथ पूरक के रूप में मिलाकर 30:1 सी/एन अनुपात में खाद तैयार किया गया। चावल के भूसे को कुकुट अपशिष्ट के साथ अच्छी तरह मिलाया गया। समय बीतने के साथ जीवाणुओं के विकास के कारण ढेर का तापमान बदलता रहा। 98 वें दिन कंपोस्ट तैयार हुआ।



चावल का भूसा 30:1 सी/एन अनुपात के साथ खाद

iii) 25:1 सी/एन अनुपात के साथ कम्पोस्ट की तैयारी

आरंभिक दिनों के दौरान सापेक्ष आद्रता 48%, पीएच 5.5 एवं तापमान 42°C. पर पूरक के रूप में चावल के छिलके के साथ अपशिष्ट को मिलाकर 25:1 सी/एन अनुपात में खाद को तैयार किया गया। ढेर में जीवाणुओं के गुणन के कारण तापमान बदलता रहा। कम्पोस्ट बनाने हेतु 84 किलो अपशिष्ट को 84 किलो चावल के भूसे में मिलाया गया। 98 वें दिन कंपोस्ट तैयार हुआ।



चावल का भूसा 25:1 सी/एन अनुपात के साथ खाद

I) 35:1 सी/एन अनुपात के साथ वर्मीकम्पोस्ट की तैयारी

35:1 सी/एन अनुपात के साथ कम्पोस्ट तैयार किया गया जिसमें नमी 45%, पीएच 5.5 और तापमान 39°C. पर 35 किलोग्राम अपशिष्ट को 84 किलोग्राम



सी/एन अनुपात 35:1 के साथ वर्मीकम्पोस्ट

चावल के छिलके के साथ मिलाकर इसे तैयार किया गया। इसमें आद्रता 45 से 50 प्रतिशत के आसपास बनी रही। चावल के छिलके को कुकुट अपशिष्ट के साथ अच्छी तरह मिलाया गया। ढेर के अंदर जीवाणुओं के बढ़ने के कारण तापमान बदल रहा था। 98 वें दिन कंपोस्ट तैयार हुआ। खाद तैयार होने के बाद केंचुओं को वर्मिकम्पोस्ट में बदलने के लिए खाद के ढेर में डाल दिया गया। केंचुओं के आने के 116 वें दिन अंतिम उत्पाद (वर्मिकम्पोस्ट) तैयार हुआ। 80 वें दिन सापेक्ष आर्द्रता 50%, pH 5.5 और तापमान 25°C. रहा।

ii) 30:1 सी/एन अनुपात के साथ वर्मिकम्पोस्ट की तैयारी

सापेक्ष आर्द्रता 47%, pH 5.5 और तापमान 40°C. पर 51 किलोग्राम अपशिष्ट को 84.15 किलोग्राम चावल के छिलके के साथ पूरक के रूप में मिलाकर 30:1 सी/एन अनुपात में खाद तैयार किया गया। चावल के छिलके को कुकुट अपशिष्ट के साथ अच्छी तरह मिलाया गया। समय बीतने के साथ इसमें जीवाणुओं के विकास के कारण ढेर का तापमान बदलता रहा। 98 वें दिन कंपोस्ट तैयार हो गया। खाद तैयार होने के बाद केंचुओं को वर्मिकम्पोस्ट में बदलने के लिए खाद के ढेर में डाल दिया गया। केंचुओं के डालने के 116 वें दिन अंतिम उत्पाद (वर्मिकम्पोस्ट) तैयार हुआ। अंतिम दिन सापेक्ष आर्द्रता 50%, पीएच 5.5 और ढेर का तापमान 24°C. रहा।



30:1 सी/एन अनुपात के साथ वर्मिकम्पोस्ट

iii) 25:1 सी/एन अनुपात के साथ वर्मिकम्पोस्ट की तैयारी

आरंभिक दिनों के दौरान सापेक्ष आर्द्रता 48%, पीएच 5.5 और तापमान 42°C. पर पूरक के रूप में चावल के भूसे के साथ अपशिष्ट को मिलाकर 25:1 सी/एन अनुपात में खाद तैयार किया गया। ढेर में जीवाणुओं के गुणन के कारण तापमान बदलता रहा। कम्पोस्ट बनाने के लिए 84 किलो अपशिष्ट को 84 किलो चावल के भूसे में मिलाया गया। 98 वें दिन कंपोस्ट तैयार हुआ। खाद तैयार होने के बाद केंचुओं को वर्मिकम्पोस्ट में बदलने के लिए ढेर में डाल दिया गया। केंचुओं के डालने के 116 वें दिन अंतिम उत्पाद (वर्मिकम्पोस्ट) तैयार हुआ। वर्मिकम्पोस्ट बनने के अंतिम दिन सापेक्ष आर्द्रता 50%, pH 5.5 और तापमान 25°C. रहा।



25:1 सी/एन अनुपात के साथ वर्मिकम्पोस्ट

आर.के. महापात्रा एवं अन्य..

घर आंगन कुकुट पालन, पशुधन, वर्मिफार्मिंग एवं मोरिंगा एकीकरण हेतु मॉडल परियोजना एवं प्रदर्शन इकाई

बुनियादी ढांचे का विकास : लगभग एक एकड़ भूमि पर एक फुट ईंट की सीमा दीवार (लिंकडचेनमेश) खड़ी की गई। पूरे मोरिंगा क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल 63,000 वर्ग फुट है। साथ ही प्रवेश मार्ग और द्वार भी लगाए गए हैं।

मोरिंगा पौधारोपण : जंगल की सफाई की गई और फार्म से चट्टानें हटाई गईं। भूमि समतलीकरण, जुताई और जमीन की तैयारी भी पूरा कर लिया गया। बीज बोने के लिए टीले की कटाई भी की गई।



बीज बोने हेतु टीलों के कटाई का काम पूर्ण



मोरिंगा के बीज बोना एवं जल छिड़काव स्थापित



जमीन पर उगे मोरिंगा पौधे

शेड निर्माण : कुकुटों के लिए रात्रि आश्रय का निर्माण पूरा हुआ। 3502 वर्ग फुट के क्षेत्र के साथ कुल 7 रैन बसरों का निर्माण किया गया और प्रत्येक रैन बसरा का क्षेत्रफल लगभग 18 फीट x 10 फीट = 180 वर्ग फुट है।



मोरिंगा फार्म में कुकुट बसरे



मोरिंगा फार्म के रैन बसरों में कुकुट

वर्मिकम्पोस्ट शेड का काम पूरा हुआ है। वर्मिकम्पोस्ट शेड में जय गोपाल नस्ल के केंचुओं की वर्मिकम्पोस्ट की गई।



वर्मिकम्पोस्ट शेड



वर्मिकम्पोस्ट गड्ढा

आर.के. महापात्रा एवं अन्य..

सीमेंट कंक्रीट के वृत्तों में केंचुआ उत्पादन का मानकीकरण

सीमेंट कंक्रीट के फर्श पर कंक्रीट के वृत्तों (व्यास-3 फीट, ऊंचाई-2 फीट) बिछाए गए। बांस के फ्रेम को हरे रंग के एक जाली के साथ छाया प्रदान की गई। पहले उपचार में सीमेंट कंक्रीट के वृत्तों को तीन परतों में 8 इंच गहराई तक परिपक्व गया के गोबर (15 दिन पुराना) को वैकल्पिक पर तोंमें और बायोमास (हरी धास और 15 दिनों के परिपक्व सूखे पत्तों) से भरा गया। दूसरे उपचार में सीमेंट कंक्रीट के वृत्तों को परिपक्व गया के गोबर और बत्तख के अपशिष्ट (15 दिन पुराने) और बायोमास (हरी धास और 15 दिनों के परिपक्व सूखे पत्तों) के मिश्रण (50:50) को 8 इंच गहराई की वैकल्पिक रूप में तीन परतों में भरा गया। प्रत्येक वृत्त की परत को 500 ग्राम केंचुओं के साथ संरोपित किया गया। 70-80 दिनों की अवधि के बाद प्रत्येक वृत्त से 2.5-3.0 किलोग्राम केंचुओं की उत्पत्ति की गई।



केंचुआ उत्पादन

गहन पालन प्रणाली के तहत विभिन्न दाना आधारित आहारों के पहले चरण के दौरान श्वेत पेकिन बत्तख का उत्पादन प्रदर्शन
श्वेत पेकिन बत्तख को मांस और अंडों के उत्पादन के लिए गहन पालन प्रणाली के तहत पाला जाता है। उपलब्धता के आधार पर किसान अपने बत्तखों को गेहूं, कन्खी आदि विभिन्न प्रकार के दाने के उपयोग करते हैं। इस लिए गहन पालन प्रणाली के तहत पहले चरण के दौरान श्वेत पेकिन बत्तख के उत्पादन प्रदर्शन का

पता लगाने के लिए एक अध्ययन किया गया। श्वेत पेकिन बत्तख को (45; 165 दिन) तीन समूहों में विभाजित किया गया और बिना (बीआर-0) और बीआर के साथ आहार, 50 (बीआर-50) और 100 प्रतिशत (बीआर-100) गेहूं की जगह बत्तखों को 40 सप्ताह के होने तक 115 दिनों की अवधि के लिए यह खिलाया गया। सभी आहार आइसो-नाइट्रोजनस (18.31-18.70%, CP) और आइसो-कैलोरिक (2610-2660, ME, Kcal/kg) रहे। समूहों के बीच कुल आहार ग्रहण (17.54-18.28, किग्रा) और अंडा उत्पादन (6.29-7.02, दर्जन) रहा। बीआर-0 समूह (68.22%), बीआर-50 समूह (72.63%) और बीआर-100 समूह (65.11%) के बीच बत्तखों के अंडा उत्पादन (डीडीईपी) प्रतिशत में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं दर्शाया। दाना रूपांतरण अनुपात (प्रति दर्जन अंडा उत्पादन किलो में खपत दाना) समूहों के बीच समान रहा और 2.62 से 2.79 तक रहा। बीआर-0, बीआर-50 और बीआर-100 में प्रति किलोग्राम दाना की लागत (रु.) क्रमशः 32.50, 31.95 और 31.56 रही। बीआर-50 (6.97) में प्रति अंडे की लागत (रु.) बीआर-100 (7.33) और बीआर-0 (7.42) से कम रही। अंडे का वजन (71.27-72.16, ग्राम), अंडे के आकार सूचकांक (67.11-69.19), एल्ब्यूमिन इंडेक्स (0.12-0.13), योक इंडेक्स (0.42-0.44), हॉग यूनिट (85.43-86.98), अंडे के निहित तत्व जैसे समूहों में एल्ब्यूमिन (55.09-55.71), जर्दी (31.75-32.38) और शेल वजन (12.45-12.63) का प्रतिशत समान रहा। इस के झिल्ली के साथ खोल की मोटाई (मिमी) बीआर-100 समूह (0.53) में बीआर-0 समूह (0.51) की तुलना में अधिक ($P < 0.05$) रही, किन्तु दोनों बीआर-50 समूह (0.53) समान रहे। हालांकि झिल्ली के बिना खोल की मोटाई (0.43-0.44, मिमी) समूहों के बीच समान ($P > 0.05$) रही। इस से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पहले चरण के दौरान श्वेत पेकिन बत्तख को विभिन्न दानाओं पर रखा जा सकता है। गहन पालन प्रणाली के तहत गेहूं और कन्खी आधारित आहार को हालांकि, समान अनुपात में गेहूं और कन्खी के मिश्रण ने प्रदर्शन में वृद्धि दर्शायी एवं यह किफायती भी रही।

पी.के.नायक एवं अन्य

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

अनुसूचित जनजाति घटक/टीएसपी कार्यक्रम

भाकृअनुप-डीपीआर द्वारा आदिलाबाद जिला, तेलंगाना के आदिवासी किसानों को घर आँगन कुक्कुट पालन हेतु इनपुट वितरण

भाकृअनुप-कुक्कुट अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद ने 25 सितंबर 2021 को डीएपीएसटीसी कार्यक्रम के तहत तुम्मागुडा गांव (इंदरवल्ली मंडल), आदिलाबाद जिला (तेलंगाना) के गोंड जनजातियों में घर आँगन कुक्कुट पालन के उन्नत किस्मों (वनराजा और ग्रामप्रिया) का वितरण किया। कार्यक्रम का उद्देश्य अंडा और मांस उत्पादन में वृद्धि के माध्यम से दूरस्थ आदिवासी परिवारों की आजीविका और पोषण सुधार करना है। इस में 100 किसानों को एक छोटी घर आँगन कुक्कुट पालन इकाई स्थापित करने के सहायक के रूप में विभिन्न इनपुट भाकृअनुप-कुक्कुट अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद ने 25 सितंबर 2021 को डीएपीएसटीसी कार्यक्रम के तहत तुम्मागुडा

गांव (इंदरवल्ली मंडल), आदिलाबाद जिला (तेलंगाना) के गोंड जनजातियों में घर आँगन कुक्कुट पालन के उन्नत किस्मों (वनराजा और ग्रामप्रिया) का वितरण किया। कार्यक्रम का उद्देश्य अंडा और मांस उत्पादन में वृद्धि के माध्यम से दूरस्थ आदिवासी परिवारों की आजीविका और पोषण सुधार करना है। इस में 100 किसानों को एक छोटी घर आँगन कुक्कुट पालन इकाई स्थापित करने के सहायक के रूप में विभिन्न इनपुट जैसे वयस्क कुक्कुट (825), रेन बसरे (100), दाना पात्र (100), जल पात्र (100) और दाना (1600 किग्रा) वितरित किया गया। डॉ. आर.एन.चटर्जी, निदेशक, भाकृअनुप-डीपीआर ने किसानों को संबोधित किया और स्थायी ग्रामीण आजीविका में घर आँगन कुक्कुट पालन की भूमिका और 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने के बारे में बताया। स्थानीय निकायों के जन प्रतिनिधियों ने इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया और निदेशालय द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की। आदिवासी किसानों के उत्थान के लिए कार्यक्रम में महिलाओं सहित 200 आदिवासी किसानों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। कोविड दिशा निर्देशों के अनुसार मास्क



पहनना, सामाजिक दूरी बनाए रखना और SOP का पालन किया गया। इस निदेशालय के वैज्ञानिकों ने आदिवासी किसान लाभार्थियों के साथ बातचीत की और कुकुटों से अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए ग्रामीण उन्नत कुकुट किस्मों के वैज्ञानिक पालन के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम में निदेशालय के डॉ. एम.वी.एल.एन.राजू, डॉ. यू. राजकुमार, डॉ. एल.एल.प्रिंस, डॉ. बी. प्रकाश, डॉ. के.एस.राजार्वींद्र और डॉ. एस. जयकुमार ने भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन एवं संचालन निदेशालय के टीएसपी प्रकोष्ठ द्वारा किया गया।

श्री सोयमबाबू राव, माननीय सांसद (लोकसभा) ने हीरापुर गांव, आदिलाबाद, तेलंगाना में भाकृअनुप-डीपीआर, हैदराबाद द्वारा आयोजित टीएसपी कार्यक्रम में भाग लिया

भाकृअनुप-डीपीआर, राजेन्द्रनगर, हैदराबाद ने 24 दिसंबर, 2021 को अनुसूचित जनजातियों के विकास कार्य योजना (टीएसपी) के तहत तेलंगाना के आदिलाबाद जिले के हीरापुर गांव में घर आँगन कुकुट वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया। कुल छिह्नित किसानों को कुकुट, ऐनबसेरा, दाना पात्र, जल पात्र और कुकुटों को बिमारी से बचाने हेतु दवाइयाँ दी गई। किसानों को कृषि

प्रदर्शन और कुकुट के वैज्ञानिक पालन पर प्रशिक्षण दिया गया। उन्हें इनपुट वितरण से पहले उन्नत कुकुट किस्मों जैसे वनराजा, ग्रामप्रिया और श्रीनिधि के पालन के अतिरिक्त लाभों से अवगत कराया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय सांसद (लोकसभा) श्री सोयमबाबू राव ने भाग लिया। उन्होंने कृषि को लाभदायक बनाने में कुकुट पालन और पशुधन क्षेत्र के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कृषि आय को दोगुना करने में प्रधानमंत्री की दृष्टि और लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में कुकुट पालन की भूमिका के बारे में बताया। उन्होंने आदिलाबाद के आदिवासी जिले में घर आँगन कुकुट पालन को लोकप्रिय बनाने में भाकृअनुप-डीपीआर, हैदराबाद के प्रयासों की सराहना की और निदेशालय द्वारा भविष्य में और अधिक गांवों को आवरण करने का आग्रह किया। डॉ. आर.एन.चटर्जी, निदेशक, भाकृअनुप-डीपीआर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और देश में घर आँगन कुकुट पालन के माध्यम से आजीविका और आय सूजन में भाकृअनुप-डीपीआर की भूमिका पर जोर दिया। टीएसपी कार्यक्रम के प्रभारी डॉ.यू.राजकुमार, प्रधान वैज्ञानिक ने आदिलाबाद जिले में टीएसपी कार्यक्रम के उद्देश्य और कार्यान्वयन के बारे में बताया। हीरापुर गांव के सरपंच, एमपीटीसी, इंद्रवेली मंडल के स्थानीय निकायों के अन्य प्रतिनिधियों, आईटीटीए, उत्तर के अधिकारियों और भाकृअनुप-डीपीआर, हैदराबाद के वैज्ञानिकों की टीम ने कार्यक्रम में भाग लिया। डॉ.बी.प्रकाश, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप-डीपीआर, हैदराबाद ने धन्यवाद ज्ञापित किया।



अन्य गतिविधियां

माननीय प्रधानमंत्री के कार्यक्रम की भाकृअनुप-डीपीआर में सीधा प्रसारण

भाकृअनुप-डीपीआर, हैदराबाद और क्षेत्रीय केंद्र, भुवनेश्वर में 16 दिसंबर, 2021 को माननीय प्रधानमंत्री के कार्यक्रम पूर्व-जीवंत गुजरात शिखर सम्मेलन 2021 "प्राकृतिक खेती (शून्य बजट प्राकृतिक खेती)" के राष्ट्रीय सम्मेलन का सीधा प्रसारण किया गया जिसमें निदेशालय के कर्मचारियों ने भाग लिया। इस महत्वपूर्ण घटना की जानकारी को व्यापक प्रचार प्रसार हेतु संस्थान के ट्रिविटर और फेसबुक पेजों पर भी पोस्ट किया गया।

प्राकृतिक खेती पर आयोजित माननीय प्रधान मंत्री के इस कार्यक्रम के सीधे प्रसारण को बालानगर (मंडल), महबूबनगर (जिला) के आदिवासी गांव बावोजी तांड़ा के कुल 75 किसानों ने देखा। इस अवसर पर वैज्ञानिक-किसान परिचर्चा का भी आयोजन किया गया और किसानों को घर आँगन कुकुट पालन की भूमिका और प्राकृतिक खेती में इसके महत्व के बारे में बताया गया।



प्राकृतिक खेती पर माननीय प्रधानमंत्री के कार्यक्रम का सीधा प्रसारण

कुकुट अपशिष्ट प्रबंधन की अवधारणा और कुकुट अपशिष्ट से खाद और वर्मीकम्पोस्ट बनाने के लाभों के बारे में किसानों को बताया गया। किसानों को जैविक खेती के लाभों और अपशिष्ट को धन में बदलने के बारे में जानकारी प्रदान की गई। कई खाद्य और जल जनित रोगों से निपटने में शौचालयों के



गाँव में प्राकृतिक खेती पर माननीय प्रधानमंत्री के कार्यक्रम का सीधा प्रसारण उपयोग के महत्व को समझाया गया। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए अपशिष्ट को पुनर्चक्रण योग्य और गैर-पुनर्नवीनीकरण योग्य करने की आवश्यकता पर भी बताया गया।



वैज्ञानिक-किसान बातचीत

कुकुटों के स्वास्थ्य प्रबंधन के बारे में बताते हुए कुकुटों को एनडी लसोटा टीकाकारण किया गया। विटामिन अनुपूरक भी दिए गए। अंडे के पोषण लाभों की जानकारी प्रदान की गई और किसानों को उबले अंडे वितरित किए गए। किसानों को संस्थान में कुकुट अपशिष्ट से विकसित वर्मीपोल, वर्मीकम्पोस्ट भी प्रदान किया गया। वैज्ञानिकों के एक दल जिसमें डॉ. एम.आर.रेड्डी, आर.के.महापात्रा, टी.के.भट्टाचार्य, एल.लेस्ली लियो प्रिंस, बी.प्रकाश और एस.जयकुमार (समन्वयक) ने कार्यक्रम में भाग लिया और निदेशालय की विभिन्न गतिविधियों और गांव में एमजीएमजी कार्यक्रम के महत्व पर विस्तार से बताया।

डीडीजी (पशु विज्ञान) का भाकृअनुप-डीपीआर, हैदराबाद का दौरा

बी.एन.त्रिपाठी, डीडीजी (पशु विज्ञान) भाकृअनुप, नई दिल्ली ने 22 अक्टूबर 2021 को इस निदेशालय का दौरा किया। निदेशालय के वैज्ञानिकों के साथ बातचीत के दौरान देश भर में उन्नत कुकुट किस्मों के प्रसार के माध्यम से विशेष रूप से घर आंगन कुकुट पालन उत्पादन क्षेत्र में हुए विकास पर डीडीजी महोदय ने भाकृअनुप-डीपीआर की योगदान की सराहना की। डॉ.त्रिपाठी ने कहा कि, सभी को वर्तमान कुकुट पालन क्षेत्र की चुनौतियों को स्वीकारना होगा और हितधारकों की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्होंने कार्रवाई योग्य 10 बिंदुओं की पहचान की जिन्हें आने वाले पांच वर्षों में

प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। डीडीजी (एएस) ने उद्योग के साथ नियमित रूप से अंतराफलक बैठकें आयोजित करते रहने और उद्योग की आवश्यकताओं के आधार पर परियोजनाओं को तैयार करने की सलाह दी। उन्होंने उद्योग और अन्य संस्थानों के साथ सहयोगी परियोजनाओं को आरंभ करने की भी सलाह दी। इससे पहले डीडीजी (एएस) ने इस निदेशालय के एक जैव सूचना विज्ञान प्रयोगशाला भवन का उद्घाटन किया। डॉ. प्रवीण मलिक, पशुपालन आयुक्त, डीएचडी, डॉ. ए.के.त्यागी, एडीजी (एएस), डॉ. एस.बी. बरबुद्धे, निदेशक, भाकृअनुप-एनआरसीएम और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी इस



जैव सूचना विज्ञान प्रयोगशाला स्कंध का उद्घाटन

अवसर पर उपस्थित रहे। सभी ने हमारे राष्ट्रपिता की 152 वीं जयंती के अवसर पर विशेष स्वच्छता अभियान में भी भाग लिया और परिसर में कई फलों के पेड़ लगाए। डॉ. ए.के.त्यागी, एडीजी (एएनपी) ने कुकुट पालन क्षेत्र में संस्थान के योगदान की सराहना की। डॉ.आर.एन.चटर्जी, निदेशक, भाकृअनुप-डीपीआर ने संस्थान की अनुसंधान उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने भविष्य के महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में भी बताया जिसके लिए संस्थान ने ईएफसी में एक रोड मैप तैयार किया है।

मोरिंगा के साथ कुकुटों की एकीकृत खेती पर वीडियो

- किसानों के लाभ के लिए “मोरिंगा के साथ कुकुट की एकीकृत खेती” पर एक वीडियो तैयार किया गया। <https://www.youtube.com/watch?v=KduUab4NEKK>
- “मोरिंगा एवं कुकुटों की एकीकृत खेती” पर भी वीडियो तैयार किया गया। <https://www.youtube.com/watch?v=bedu7gZEKik>
- मोरिंगा इंटीग्रेटेड फार्मिंग सिस्टम पर दो फोल्डरों को निदेशक, भाकृअनुप-डीपीआर के साथ डीडीजी (पशु विज्ञान), पशु पालन आयुक्त, एडीजी (पशु विज्ञान), और निदेशक, एनआरसीएम द्वारा प्रकाशित एवं जारी किया गया।



एकीकृत खेती पर फोल्डर विमोचन

हिंदी कार्यान्वयन

निदेशालय ने दिनांक 18-08-2021 एवं 21-12-2021 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दो त्रैमासिक बैठकें आयोजित की, जिस में कार्यालय में हिंदी भाषा के प्रभावी कार्यान्वयन से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई। निदेशालय ने कर्मचारियों के लिए उनके हिंदी भाषा कौशल को उन्नत करने के लिए दो वर्चुअल हिंदी कार्यशालाएं (14-09-2021 और 28-12-2021) भी आयोजित की, दोनों कार्यशालाएं कर्मचारियों के लिए उपयोगी रही।

1-15 सितंबर 2021 के दौरान हिंदी पश्चावड़ा समाग्रोह और 14 सितंबर 2021 को हिंदी दिवस आयोजित किया गया, इन समारोहों के दौरान कर्मचारियों के लिए विभिन्न साहित्यिक प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। डॉ. एस. जयकुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक और जी.मधुकर, तकनीकी अधिकारी ने हिंदी प्राज्ञ पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न किया, जिसका संचालन केंद्रीय हिंदी शिक्षण योजना, हैदराबाद द्वारा किया गया।

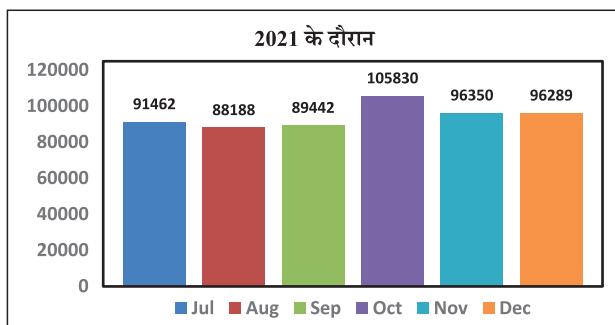
आर.एन.चटर्जी, निदेशक ने अपने सम्बोधन में कहा कि, पूरे देश में हिंदी भाषा और इसके व्यापक उपयोग के महत्व को बढ़ाया जा रहा है। निदेशक ने सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार और प्रमाणपत्र प्रदान किए और उन्हें शुभकामनाएं दीं। इस अवधि के दौरान आयोजित सभी कार्यक्रमों में कोविड-19 के निर्देशों का पालन किया गया।

एनआईआरडीपीआर, राजेंद्रनगर, हैदराबाद में दिनांक 02-12-2021 को सम्पन्न नाराकास-2 की बैठक में भाग लिया गया। इस अवधि के दौरान डॉ. एस. जयकुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक और जी.मधुकर, तकनीकी अधिकारी ने हिंदी प्राज्ञ पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न किया, जिसका संचालन केंद्रीय हिंदी शिक्षण योजना, हैदराबाद द्वारा किया गया।

मानव संसाधन विकास

एकेएमयू

- संस्थान के वेबपेज (<http://www.pdonpoultry.org>) को अक्सर अद्यतन किया जाता है और जुलाई से दिसंबर 2021 की अवधि के दौरान औसतन 3,117 विजिट प्रतिदिन के साथ लगभग 5.67 लाख हिट पाए गए। डीपीआर वेबपेज में पेमेंट गेटवे लिंक बनाया रखा गया।



- भाकृअनुप - डीपीआर मोबाइल ऐप :** अंग्रेजी में एक एंड्रॉइड ऐप बनाया गया है और इसमें संस्थान, कुक्कुट जर्मप्लाज्म, कुक्कुट ब्रीडिंग पर एआईसीपीआर, कुक्कुट बीज परियोजना, जर्मप्लाज्म की उपलब्धता आदि के बारे में जानकारी प्रदान की जाती है। जुलाई से दिसंबर, 2021 की अवधि के दौरान लगभग 413 उपयोगकर्ता इसे डाउनलोड किए। लॉन्चिंग के बाद से कुल 3425 उपयोगकर्ता मोबाइल ऐप डाउनलोड किए। 28 यूजर्स द्वारा दी गई औसतरेटिंग 5 में से 4.5 है।
- भाकृअनुप - डीपीआर पोल्ट्री यूट्यूब चैनल:** यहाँ पर डीपीआर प्रोफाइल एवं अन्य कई सूचनात्मक वीडियो उपलब्ध हैं। <http://www.youtube.com/channel/UCDL2gnmjtzabrxX39waOITA> जुलाई से दिसंबर 2021 की अवधि के दौरान कुल 39,077 बार इसे देखा गया।
- फेसबुक पेज:** <https://www.facebook.com/ICAR.DPR.Hyderabad> और ट्विटर हैंडल <https://twitter.com/IcarPoultry> को किसानों और कुक्कुट उद्यमियों को सूचना के प्रभावी प्रसार के लिए बनाए रखा गया।

डीपीआर (मुख्य) आपूर्ति : जुलाई से दिसंबर, 2021 की अवधि के दौरान विभिन्न हित धारकों को कुल 79,089 कुक्कुट जर्मप्लाज्म की आपूर्ति (3,681 पैरेंट जर्मप्लाज्म सहित) की गई। डीपीआर फार्म ने एक दिन की आयुके कुल 22,663 चूजों की आपूर्तिकी।

एआईसीआरपी-पीबीआपूर्ति : जुलाई से दिसंबर, 2021 की अवधि के दौरान एआईसीआरपी-पीबी के विभिन्न केंद्रों द्वारा 3,68,716 जर्मप्लाज्म का विक्रय किया गया।

कुल तैयार दाना (स्टार्टर+ग्रोवर+लेयर) = 90.9 टन

जर्मप्लाज्म आपूर्ति (डीपीआर एवं एआईसीआर पी-पीबी)

इस समयावधि के दौरान तैयार किया गया दाना

माह	स्टर्टर दाना	उत्पादक दाना	लेएर दाना
जुलाई	1.4	1.2	10.8
अगस्त	2.1	2.4	13.6
सितंबर	0.85	0.6	11.7
अक्टूबर	1.8	—	13.25
नवंबर	0.3	1.3	13.2
दिसंबर	0.8	0.3	15.3
कुल	7.25	5.8	77.85

इस समयावधि के दौरान जर्मप्लाज्म की आपूर्ति

माह	भाकृअनुप-डीपीआर (मुख्य)	एआईसीआरपी-पीबी
जुलाई	8,884	32,565
अगस्त	11,939	55,248
सितंबर	19,676	76,815
अक्टूबर	12,039	80,361
नवंबर	13,826	65,187
दिसंबर	12,725	58,540
कुल	79,089	3,68,716

पुरस्कार / मान्यताएं

- डॉ. यू. राजकुमार, प्रधान वैज्ञानिक को तेलंगाना में कुकुट क्षेत्र के विकास में उत्कृष्ट योगदान हेतु वर्ष 2021 के लिए सर्वश्रेष्ठ कुकुट वैज्ञानिक सी.के.राव ट्रस्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



- डॉ. यू. राजकुमार, प्रधान वैज्ञानिक को कुकुट पालन के क्षेत्र में किसानों के विकास और कल्याण के लिए उत्कृष्ट योगदान के लिए वर्ष 2021 के लिए पद्मश्री प्रो.एस.वी.सुब्बा राव हेतु नेस्तम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



आयोजित बैठकें

संस्थान संयुक्त कर्मचारी परिषद : इस निदेशालय में दिनांक 21 दिसंबर, 2021 को संस्थान संयुक्त कर्मचारी परिषद की बैठक संपन्न हुई।

व्यक्तिगत

पदोन्नति

- डॉ. बी.प्रकाश, वरिष्ठ वैज्ञानिक को दिनांक 1 जनवरी, 2020 से प्रभावी रूप में प्रधान वैज्ञानिक के अगले उच्च ग्रेड पर पदोन्नत किया गया।
- डॉ. एम. षण्मुगम, वरिष्ठ वैज्ञानिक (आरजीपी- 8000) को दिनांक 7 जनवरी, 2020 से वरिष्ठ वैज्ञानिक के अगले उच्च ग्रेड (आरजीपी-9000) पर पदोन्नत किया गया।
- श्री. ए.वी.जी.के.मूर्ति को दिनांक 13 अक्टूबर, 2021 (अपराह्न) से वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी के पद पर पदोन्नत किया गया।
- श्रीमती टी.आर.विजयलक्ष्मी को दिनांक 20 जुलाई, 2021 (अपराह्न) से सहायक प्रशासनिक अधिकारी के पद पर पदोन्नत किया गया।
- श्रीमती एम. कमला को दिनांक 2 सितंबर, 2021 (पूर्वाह्न) से सहायक प्रशासनिक अधिकारी के पद पर पदोन्नत किया गया।

नव नियुक्ति

- श्री बाला कामेश, वित्त एवं लेखा अधिकारी, दिनांक 9 नवंबर, 2021 को

भाकृअनुप-अटारी-जोन X, हैदराबाद से पदोन्नति पर इस संस्थान में सम्मिलित हुए।

- डॉ. राजालक्ष्मी बेहरा, वैज्ञानिक भाकृअनुप-एनडीआरआई, ईआरएस, कल्याणी, पश्चिम बंगाल से दिनांक 4 अक्टूबर, 2021 को स्थानांतरण पर भाकृअनुप-डीपीआर, क्षेत्रीय केंद्र, भुवनेश्वर में सम्मिलित हुए।

सेवानिवृत्ति

- श्री एम. पंतुलु, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (वाहन चालक) दिनांक 31 जुलाई, 2021 को सेवा निवृत्त हुए हैं।
- श्रीमती आर.टी. निर्मला वेरोनिका, सहा. प्रशासनिक अधिकारी, दिनांक 1 सितंबर, 2021 को वीआरएस पर सेवा निवृत्त हुई हैं।

स्थानांतरण

- श्री आर. सुदर्शन, सहा.ले.वि.अ. दिनांक 4 दिसंबर, 2021 को भाकृअनुप-डीपीआर से भाकृअनुप-क्रीडा, हैदराबाद में स्थानांतरित हुए हैं।

सेवा में To,

संपादन समिति

डॉ. एस.पी. यादव, प्रधान वैज्ञानिक

डॉ. आर.के. महापात्रा, प्रधान वैज्ञानिक

श्री जे. श्रीनिवास राव, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी



निदेशक द्वारा प्रकाशित

भाकृअनुप - कुकुट अनुसंधान निदेशालय

राज्यद्रव्यग्रन्थालय, हैदराबाद - 500 030, तेलंगाना, भारत

दूरभाष: +91 (40) 2401 5651 / 7000 / 5652 / 8687 फैक्स: +91 (40) 2401 7002

ईमेल: pdpoult@nic.in वेबसाइट: www.pdonpoultry.org

